BAI Hons & Subsidiary

Philosophy

Jain's theory of Bondage & liberation

अन्य भारतीय दर्शनों की भाँति जैन दर्शन भी 'बन्धन और मुक्ति (मोक्ष) की धारणा' अवधारणा को स्वीकार करती है। भारतीय दर्शन में बन्धन का अर्थ निरन्तर जन्मग्रहण करना, संसार के दुःखों का उपभोग करना माना जाता है। जैन दर्शन में भी बन्धन का अर्थ जीवों को सांसारिक दुःखों में लिप्त होना तथा जन्म-जन्मान्तर के चक्कर माना जाता है।

जैन दर्शन के अनुसार अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति तथा अनन्त आनन्द को जीवों का अन्तर्निहित स्वरूप माना जाता है जिसे अनन्त चतुष्टय भी कहा जाता है, परन्तु बन्धन ग्रस्त जीवों में शारीरिक प्रवृत्तियों का लोप हो जाता है। जिस प्रकार मेघ सूर्य के प्रकाश को ढँक लेता है ठीक उसी प्रकार बन्धन की स्थिति में आत्मा के स्वाभाविक गुणों पर पर्दा पड़ जाता है। अब प्रश्न उठता है कि आत्मा किस प्रकार बन्धन ग्रस्त हो जाती है? जैन दर्शन के अनुसार आत्मा का शरीर के साथ संयोग होने एवं शरीर का निर्माण पुद्गल कणों के साथ हो जाता है तो बन्धन का मूल का कारण है। अज्ञानता के कारण आत्मा में चार प्रकार की कामनाएँ क्रोध (Anger) मान (Pride), लोभ (Greed) और माया (Infatuation) निवास करने लगती हैं। उपर्युक्त चार प्रकार की कुप्रवृत्तियों से ग्रसित जीव (आत्मा) शरीर धारण करती है तथा पुद्गल कणों को अपनी ओर आकर्षित करती है। पुद्गल कणों को आकर्षित करने के कारण इन कुप्रवृत्तियों को 'कषाय' कहा जाता है।

P. T. O

पुद्गल कणों को 'कार्मण' कहा जाता है, जीव अपने के कर्मों के अनुसार ही पुद्गल कणों को अपनी ओर आकर्षित करती है, इस प्रकार जीव (आत्मा) के शरीर की रचना एवं कर्मों के द्वारा निर्धारित होती है।

जैन दर्शन में अनेक कर्मों का उल्लेख किया गया है - आयु कर्म, ज्ञानावरणीय कर्म, अन्तराय कर्म, वेदनीय कर्म तथा दर्शनावरणीय कर्म। मनुष्य की आयु निर्धारित करने वाला आयु कर्म, अज्ञान उत्पन्न करने वाले कर्म को ज्ञानावरणीय कर्म, आत्मा की स्वाभाविक शक्ति को रोकने वाले कर्म अन्तराय कर्म, उच्च या निम्न वर्ग में उत्पत्ति करने वाले कर्म को गोत्रकर्म, सुख-दुख की वेदना उत्पन्न करने वाले कर्म को वेदनीय कर्म तथा विश्वास को नष्ट करने वाले कर्म को दर्शनावरणीय कर्म कहलाता है।

चूंकि जीव (आत्मा) कर्मानुसार पुद्गल कणों को आकृष्ट करती है। इसलिए आकृष्ट पुद्गल कण को कर्म पुद्गल कहा जाता है। आत्मा की ओर प्रवाहित कर्म पुद्गल को 'आस्रव' कहा जाता है। आस्रव जीव का स्वरूप ही नष्ट कर देता है और उसके फल में जीव बन्धनग्रस्त हो जाता है।

बन्धन भी दो प्रकार के - भाव बन्ध (Ideal Bondage) तथा द्रव्य बन्ध (Real Bondage) होते हैं। जब आत्मा में चार प्रकार की कुप्रवृत्तियाँ प्रवेश करती हैं तो आत्मा बन्धनग्रस्त हो जाती है जिसे भाव बन्ध (Ideal Bondage) कहा जाता है, मन के दूषित विचारों का पहला ही भाव बन्ध कहलाता है। जीव और पुद्गलों का संयोग ही

Date

तेरह ~~[illegible]~~ पंथ कहलाता है। दूध और पानी के संयोजन की भाँति जीव और पुद्गलों का संयोजन बन्ध-बन्ध कहलाता है।

तपस्या, आठ बन्ध तेरह पंथ का नाश होता है। आठ बन्ध के बाद तेरह बन्ध का आविर्भाव होता है, कर्मबन्ध के बाद मुक्ति (मोक्ष का मिलना) आता है जिसकी चर्चा निम्नलिखित में हुआ है।

जैन दर्शन में ज्ञान का मूल कारण ज्ञान माना, मोक्ष (निर्वाण) को ही माना है। जैन तीर्थंकरों के द्वारा आत्मा की उत्पत्ति [illegible] द्वारा ज्ञान के बारे में है। इसलिए जैन दर्शन में ज्ञान के लिए सम्यक् ज्ञान की चर्चा हुई है। सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति के लिए पाँच प्रकार के ज्ञान की मीमांसा (की व्याख्या) किया जाता है जिसके द्वारा जीव और आत्मा का मोक्ष प्राप्त [illegible] माना जाता है जिसमें सम्यक् दर्शन कहा जाता है। मोक्ष मुक्ति का दूसरा आधार सम्यक् चारित्र को माना है: सम्यक् दर्शन और सम्यक् ज्ञान के अनुसार आचरण [illegible] और मन को नियंत्रित करने के लिए सम्यक् चारित्र कहा जाता है।

सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः।

अर्थात् जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन (Right faith) सम्यक् ज्ञान (Right Knowledge) तथा सम्यक् चारित्र (Right conduct) ~~[illegible]~~ त्रिरत्न (Three Jewels ~~[illegible]~~) कहा जाता है, यही मोक्ष है।

भारतीय दर्शनों में मोक्ष के विषय

MICO LUBRICANTS

किसी एक को अपनाना आवश्यक माना गया है, कुछ दर्शनों में सिर्फ सम्यक् ज्ञान को मोक्ष के लिए पर्याप्त माना है तो कुछ दर्शनों में सिर्फ सम्यक् दर्शन को ही आवश्यक माना गया है, लेकिन जैन मत में कुछ ऐसे भी दर्शन हैं जहाँ मोक्ष के लिए सम्यक् चरित्र को भी आवश्यक माना है, लेकिन जैन दर्शन की यह विशेषता है कि तीनों मार्गों को ही सम्मिलित रूप से मिलाकर तीनों एकसाथ मार्ग को मोक्ष के लिए आवश्यक माना गया है। यही कारण है कि जैन का मोक्ष मार्ग अपने आप में अद्वितीय है। इसप्रकार मोक्ष के लिए सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र का सम्मिलित प्रयोग आवश्यक है,

सम्यक् दर्शन (Right Faith) - सत्य के प्रति श्रद्धा भाव उत्पन्न करना ही सम्यक् दर्शन कहलाता है, सम्यक् दर्शन का अर्थ अन्ध विश्वास का अभाव है। सम्यक् दर्शन का अर्थ बौद्धिक विश्वास (Rational faith) है। जैन दर्शन स्वयं ही अन्ध विश्वास का विरोधी रहा है, क्योंकि महावीर ने मानव को पवित्र होना तथा प्रत्येक बातों की ~~सत्य~~ परीक्षण करने को कहता। सम्यक् होता है तो अन्ध विश्वास का प्रतीक है,

सम्यक् ज्ञान (Right Knowledge) जीव और अजीव के भेद की स्पष्ट प्रतीति: ज्ञान लेना ही सम्यक् ज्ञान कहलाता है। जीव और अजीव के भेद की जानकारियाँ न जानने के कारण ही बन्धन का प्रादुर्भाव होता है जिसको दूर करने के लिए ज्ञान का होना आवश्यक है, सम्यक् ज्ञान संशयहीन तथा दोषरहित होता है। सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति में कुछ कर्म बाधक होते हैं, जिनका पूर्ण विनाश सम्यक् ज्ञान के द्वारा ही सम्भव है।

P.T.O.

MICO LUBRICANTS

Date

सम्यक् चरित्र (Right conduct) शुभ कार्यों का आचरण तथा अशुभ कार्यों का परित्याग ही सम्यक् चरित्र (Right conduct) कहलाता है। मोक्ष प्राप्ति के लिए तीर्थंकर के प्रति श्रद्धा तथा सत्य ज्ञान ही पर्याप्त नहीं होता सम्यक् ~~सत्य~~ बल्कि अपने आचरण की शुद्धि पर विशेष ध्यान देना अति आवश्यक है। सम्यक् चरित्र व्यक्ति के मन, वचन तथा कर्म पर नियंत्रण करने का निर्देश देता है। जैन दर्शन के अनुसार जीव सम्यक् चरित्र के माध्यम से अपने कर्मों से मुक्त हो जाता है। अतः इस अवस्था में कर्मों से मुक्ति पाने का आत्मा का कर्म और पुद्गल से छुटकारा पाना है। मोक्ष के लिए सम्यक् चरित्र ही सबसे उत्तम साधन माना जाता है।

सम्यक् चरित्र के लिए जैन दर्शन पंचमहा-व्रतों का पालन पर जोर दिया जाता है जिसे जैन दर्शन में पंचमहाव्रत की संज्ञा दी गई है। पंच महाव्रत को इसलिए चारों ओर स्वीकार किया गया है, जैन दर्शन के अनुसार पंचमहाव्रत निम्न हैं—

(1) सत्य — सत्य का अर्थ असत्य का पूर्णतः परित्याग। सत्य वह जो प्रिय और हितकारी हो उसे सूनृत कहा जाता है। सिर्फ मिथ्या वचन का परित्याग ही नहीं बल्कि मधुर वाणी का प्रयोग सत्य कहलाता है जिसका पालन मन, वचन और कर्म से होना आवश्यक है।

अहिंसा — अहिंसा का अर्थ सिर्फ हिंसा का परित्याग ही नहीं बल्कि जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक के निवासित जीवों की हिंसा का परित्याग ही अहिंसा कहलाता है। केवल जीवों की हिंसा न करना बल्कि उनके प्रति दया, प्रेम भाव रखना अहिंसा है जिसका पालन मन, वचन और कर्म से होना चाहिए। सभी जीव समान हैं इसलिए

MICO LUBRICANTS

P.T.O

6

आध्यात्मिक की दिशा में उन्नत अहिंसा की प्राप्ति होता है,

अस्तेय (Non-stealing) - अस्तेय का अर्थ चोरी का निषेध। स्वयं के लिए मानव जीवन आवश्यक मानता है। दूसरे के लिए किसी व्यक्ति के स्वत्व का अपहरण, दूसरे की भावना उसके जीवन के अपहरण के समान है, अतः चोरी का निषेध नैतिक अनुशासन के अन्तर्गत आता है,

ब्रह्मचर्य - ब्रह्मचर्य का अर्थ वासनाओं के परित्याग से है। मानव वासनाओं के अधीन होकर अनैतिक कार्यों को अपना लेता है। ब्रह्मचर्य का व्यवहारतः इन्द्रियों को नियंत्रित करना ही पालन है और इन्द्रियों की सभी प्रकार की वासनाओं का परित्याग ही ब्रह्मचर्य कहलाता है। जिसका पालन मन, वचन तथा कर्म से होना आवश्यक बतलाया गया है,

अपरिग्रह (Non-attachment) - अपरिग्रह का अर्थ विषयासक्ति का त्याग है। सांसारिक वस्तुओं से निर्लिप्त रहना ही अपरिग्रह के लिए आवश्यक माना जाता है। सांसारिक विषयों के रूप, स्पर्श, गन्ध, स्वाद तथा शब्द से सम्बद्ध इन्द्रिय विषयों का परित्याग भी मन, वचन तथा कर्म से होना आवश्यक है

उपर्युक्त व्रतों को अपना व्यक्ति मोक्ष की अनुभूति करने लगता है। मोक्षाभिलाषी जिन पुरुषों की त्रिरत्नों की आराधना करके आत्मा को अनन्त चतुष्टय की प्राप्ति होती है।